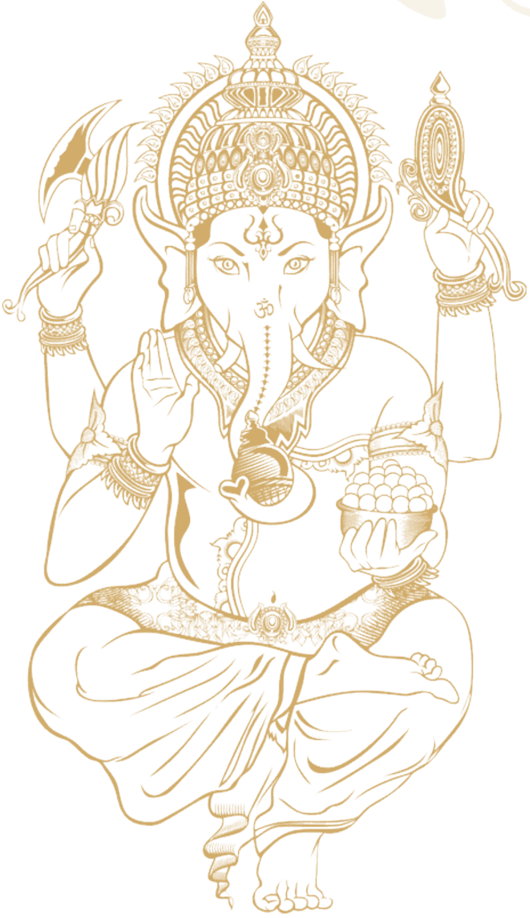

Mr.Narender Ahlawat

05 Nov 1976

05:40 AM

Chandigarh Mandir

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119352001**

तिथि 05/11/1976 **समय** 05:40:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Chandigarh Mandir **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:32:09
अक्षांश 30:44:00 उत्तर **रेखांश** 76:54:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:22:24 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	08:15:01 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:16:25 घं	योनि	गज
सूर्योदय	06:39:46 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	17:32:00 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2033	वश्य	जलचर
शक संवत	1898	वर्ग	सिंह
मास	कार्तिक	युँजा	पूर्व
पक्ष	शुक्ल	हंसक	जल
तिथि	14	जन्म नामाक्षर	ची-चिराग
नक्षत्र	रेवती	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
योग	वज्र	होरा	चंद्र
करण	गर	चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी
बुध 2वर्ष 6मा 22दि
मंगल
29/05/2022
29/05/2029

मंगल	25/10/2022
राहु	13/11/2023
गुरु	19/10/2024
शनि	28/11/2025
बुध	25/11/2026
केतु	23/04/2027
शुक्र	22/06/2028
सूर्य	28/10/2028
चन्द्र	29/05/2029

योगिनी
उल्का 0वर्ष 10मा 25दि
संकटा
01/10/2020
01/10/2028

संकटा	12/07/2022
मंगला	01/10/2022
पिंगला	13/03/2023
धान्या	11/11/2023
भ्रामरी	01/10/2024
भद्रिका	11/11/2025
उल्का	13/03/2027
सिद्धा	01/10/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			05:32:27	तुला	चित्रा	4	मंगल	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			19:10:26	तुला	स्वाति	4	राहु	चंद्र	नीच राशि	1.08	पुत्र	पितृ	वध
चंद्र			27:59:26	मीन	रेवती	4	बुध	शनि	सम राशि	1.16	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	25:09:32	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.12	अमात्य	भ्रातृ	मित्र
बुध		अ	17:41:40	तुला	स्वाति	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि	1.08	ज्ञाति	ज्ञाति	वध
गुरु	व		04:22:04	वृष	कृतिका	3	सूर्य	शनि	शत्रु राशि	1.20	कलत्र	धन	क्षेम
शुक्र			25:02:51	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	सम राशि	1.17	भ्रातृ	कलत्र	जन्म
शनि			22:51:34	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	चंद्र	शत्रु राशि	1.11	मातृ	आयु	जन्म
राहु			10:03:35	तुला	स्वाति	2	राहु	गुरु	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु			10:03:35	मेष	अश्विनी	4	केतु	शनि	मित्र राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

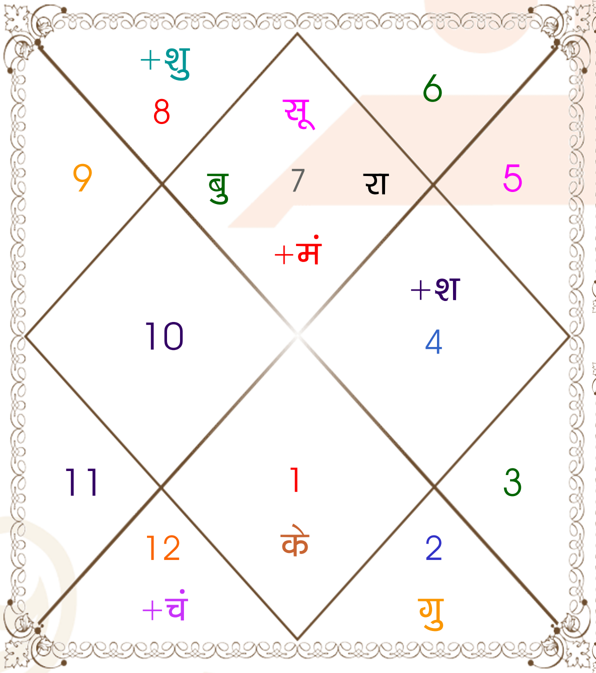

चन्द्र कुंडली

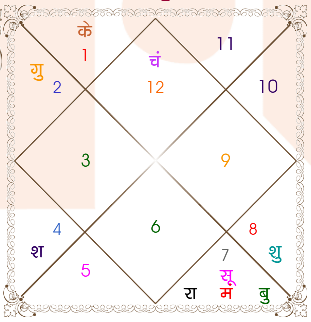

नवमांश कुंडली

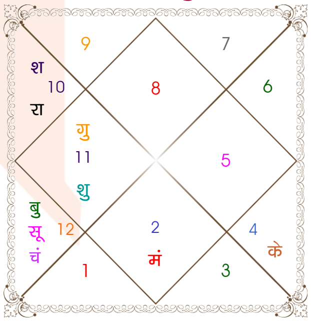

सर्वाष्टकवर्ग

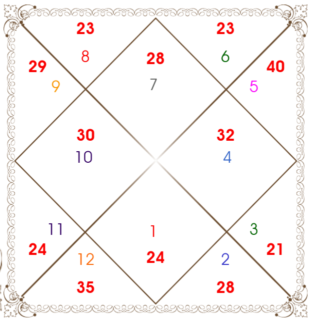

दशमांश कुंडली

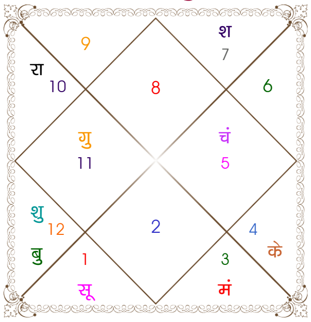

Chahal Sahab Jyotish Kendra **Astrowin Future vision Group**
B-33 Ist floor Rajdhani Park Nangloi. Delhi 110041
9899094367
Astrowin786@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, वर्ग मेष, नाड़ी अन्त्य, योनि गज तथा गण देव होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ ”चि” या ”ची” अक्षर से होगा। यथा- चिरंजीलाल, चिंतामणि आदि आप एक अच्छे स्वभाव के भद्र पुरूष होंगे तथा समाज में अन्य लोगों से आपका अत्यन्त ही मधुर व्यवहार रहेगा। धन सम्पत्ति से आप सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे तथा एक आदर्श संयमशील जीवन व्यतीत करेंगे। आप ईमानदारी के गुण से भी युक्त रहेंगे तथा अपने सभी कार्यो को इससे ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापारादि में भी शुद्ध हृदय से लाभार्जन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे एवं बुद्धिबल से ही अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

चारूशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप सम्पूर्ण सुन्दर शरीरांगों से युक्त रहेंगे तथा समाज में सभी वर्गो के मध्य समान रूप से लोकप्रिय रहेंगे एवं सभी सामाजिक जन आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आप में शौर्यगुण भी विद्यमान रहेगा तथा साहसिक एवं पराक्रमी कार्यों को करने के लिए नित्य उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप हृदय से निर्मल रहेंगे तथा सभी सामाजिक लोगों के प्रति आप स्नेह तथा प्रेम की भावना को ही व्यक्त करेंगे। इसके साथ ही एक धनवान पुरूष के रूप में भी समाज में आप की प्रसिद्धि रहेगी।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

विविध प्रकार के कार्यों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में निपुण रहेंगे तथा सभी लोगों से आपका विनम्र तथा मधुर व्यवहार रहेगा। साथ ही विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का भी आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा एक विद्वान के रूप में भी आप सम्मानीय होंगे। इसके अतिरिक्त आप धन वैभव एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

आपकी जांघ में कोई निशान या चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर होंगे तथा मंत्रणा तथा सलाह आदि कार्यों में सर्वदा चतुर एवं निपुण रहेंगे। इससे आपका समाज में पूर्ण प्रभाव रहेगा तथा सभी लोगों की आपके प्रति श्रद्धा रहेगी। आप सुन्दर स्त्री तथा गुणवान पुत्रों से सुशोभित दौरान आपकी- सभी मित्र भी शिक्षित एवं सर्वगुणों से सम्पन्न रहेंगे। आप दृढ संकल्प के व्यक्ति होंगे तथा दृढतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त स्थिर धन सम्पत्ति से भी आप सम्पन्न रहेंगे।

रेवत्या मुरुलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीङित रहेंगे।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर आकर्षक सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व से युक्त रहैंगे। आपका मस्तक विस्तृत तथा नासिका उन्नत रहेगी। साथ ही आपकी आखें भी सुन्दर होंगी तथा शरीर के सर्वांग सुन्दर तथा पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। शिल्प अथवा चित्रकारी के प्रति आपके मन में तीव्र आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आप सफलता तथा ख्याति अजित कर सकेंगे। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित एवं भयभीत रहेंगे तथा विरोध करने में सर्वथा असमर्थ होंगे। आप एक विद्धान पुरुष होंगे तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने में आप सफल रहेंगे। संगीत के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे एवं नित्य परिश्रम

करके इसमें दक्षता प्राप्त करेंगे। आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपकी हार्दिक श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी एवं यत्नपूर्वक आप धर्माचरण करने में सदैव उद्यत रहेंगे। महिला वर्ग में आप प्रिय तथा आदरणीय रहेंगे एवं कई लोगों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण सम्बन्ध भी स्थापित रहेंगे। आप अपने जीवन में भौतिक सुखसंसाधनों को प्राप्त करेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग भी करेंगे। आप में क्रोध की मात्रा अल्प ही रहेगी तथा सरकारी सेवा में भी आप नियुक्त होंगे। आप भूमि या खानों से निकाले गए पदार्थो के द्वारा लाभार्जन करने में भी दक्ष रहेंगे। आप अपनी स्त्री के पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे एवं स्वतंत्र निर्णय लेने में अपने आपको असमर्थ समझेंगे। आप स्वभाव से विनम्र रहेंगे तथा अन्य लोगों से आपके संबंध भी मधुर रहेंगे। समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने के प्रति आपकी हार्दिक इच्छा रहेगी तथा इससे आपको परमानन्द की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता का भाव आप में विद्यमान रहेगा एवं जीवन में यत्नपूर्वक इसका अनुपालन करने में आप सदैव तत्पर रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोऽहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जल या समुद्र से उत्पन्न हुए द्रव्यों तथा शंख मोती आदि रत्नों से सुशोभित रहेंगे तथा व्यापार आदि में इनसे आशातीत लाभार्जन कर सकेंगे। आप जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन को भी प्राप्त करेंगे तथा सुख पूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। नारी वस्त्रों के प्रति आप के मन में तीव्र अनुराग रहेगा तथा आपका शारीरिक कद भी मध्यम ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः।
समरुचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

जल पीने की आपकी बार बार इच्छा होगी तथा अधिक मात्रा में आप इसका उपयोग करते रहेंगे। साथ ही आपका अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उससे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नता से व्यतीत होगा। आप में पांडित्य की भी प्रधानता रहेगी तथा कृतज्ञता की भावना से सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अन्य व्यक्ति से उपकृत होने पर उसका उपकार स्वीकार करेंगे एवं उसको हार्दिक आभार भी मानेंगे। आप एक भाग्यशाली पुरुष होंगे एवं अधिकाँश कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न होते रहेंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।

विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा हमेशा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। इससे आप मानसिक तनावों से सर्वदा मुक्त रहेंगे। आप एक चतुर तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को इसी गुण से सम्पन्न करते रहेंगे। जल क्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही सन्तुष्टि एवं आनन्द की अनुभूति करेंगे एवं इसके लिए सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। आपका मन निर्मल होगा तथा अन्य लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा प्रेम का ही भाव रहेगा।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

जीवन में आजीविकार्जन संबंधी कार्यों में आप अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। साथ ही आपके कभी कभी लाभमार्ग अवरुद्ध होंगे जिससे आपको आर्थिक कष्ट का भी सामना करना पड़ेगा। पिता से आप पूर्ण धन सम्पत्ति अर्जित करेंगे तथा उसका जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। साहस एवं पराक्रम की आप में प्रधानता रहेगी एवं नित्य शौर्य कार्यों को करने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप में सन्तोषी भाव भी सर्वदा विद्यमान रहेगा।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो ड्ध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप एक गम्भीर प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा शौर्योचित गुणों से सर्वदा सुशोभित रहेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा प्रभावी व्यक्ति माने जाएंगे एवं सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप में धन संचय की वृति की भी प्रबलता रहेगी एवं कृपणता की भावना भी रहेगी। आप अपने कुल या परिवार के सर्वप्रिय होंगे तथा सभी लोग आपको हार्दिक स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। सेवाकार्यों में भी आप प्रवृत रहेंगे एवं इनको करने में मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे। आप चलने में शीघ्रता करेंगे एवं धीरे धीरे चलना आपको अरूचिकर लगेगा। इसके अतिरिक्त आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा सभी लोगों के लिए अनुकरणीय तथा प्रशंसनीय होगा साथ ही बन्धुवर्ग के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय होंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।

मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व एवं विद्धता के गुणों से समाज में आप पूर्ण रूप से प्रख्यात तथा सम्माननीय रहेंगे। साथ ही आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा इससे सभी लोग आपसे आकर्षित तथा प्रसन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि सरलता के भाव से युक्त रहेगी एवं सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की प्रतिभा की आपमें प्रबलता रहेगी। साथ ही अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करने में आप अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे एवं यत्नपूर्वक इसके लिए तत्पर रहेंगे। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में भी निपुण रहेंगे। साथ ही आप उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में विविध प्रकार के धनैश्वर्य से सुशोभित रहकर उसका उपभोग करते रहेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान रहेगा। आप बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने के इच्छुक रहेंगे तथा अनावश्यक भौतिकता की सर्वथा उपेक्षा करेंगे। इसके साथ ही आप एक उच्चकोटि के विद्वान होंगे तथा समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में उत्पन्न होने के कारण आप उच्चाधिकारी वर्ग के हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त होता रहेगा। इससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में मनोवांछित सफलता अर्जित होती रहेगी। आप एक बलवान पुरूष होंगे तथा कई कार्यों को स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगे। साथ ही जीवन में आवश्यक सुख संसाधनो को अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के सहयोगी होंगे या स्वयं भी कोई उच्च पद प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप में उत्साह की प्रबलता रहेगी एवं नित्य उत्साह से युक्त रहकर अपने समस्त सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।

आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र,

वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट जगदम्बा माता की उपासना करनी चाहिए तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही पीत वस्त्र, पीत पुखराज, पीत चन्दन, पीत पुष्प, हल्दी तथा चने की दाल आदि वस्तुओं का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी तथा स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। साथ ही सभी अशुभ फलों की समाप्ति होगी एवं समस्त शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।